तोतिया तीतर

अनिल सिंह

अभी कुछ महीने पहले, मई 2024 में प्रभात का नया कविता संग्रह आया था जिसे *एकलव्य* ने प्रकाशित किया है। यह कई मायनों में पिछले संग्रहों से बिलकुल अलग और अनूठा है। अव्वल तो यह छोटी-छोटी कविताओं का संग्रह है, छोटी मतलब हर कविता महज़ चार लाइनों की ही है। और दूसरा यह कि चार लाइनों में ही कमाल के दृश्य, विचार, भाव तीव्रता और अद्‌भुत भाषा संसार रच देने में माहिर रहे हैं, प्रभात। प्रभात की कविताओं में मामूली विषयों की उच्चतम और नायाब अभिव्यक्ति मिलने की पूरी सम्भावना रहती है।

बेमिसाल चित्र व अवलोकन

अवलोकन के मामले में प्रभात का जवाब नहीं। जिन पर किसी की नज़र नहीं है उनपर प्रभात की नज़र है। 'पंछी' नाम से संग्रह की पहली कविता ही प्रभात की बारीक और व्यापक नज़र का परिचय देती है-

रेशों से घर सिल लेते हैं,
तिनकों से घर बुन लेते हैं
पंछी बरगद के पत्तों पर
पैदल-पैदल चल लेते हैं।

इस सुविधाभोगी दुनिया और दौड़-भाग के साथ तकनीक से लबरेज़ जीवन में प्रभात को बरगद के पत्तों पर पंछियों का पैदल-पैदल चलना दिख जाता है। वो ठहरकर इत्मीनान से उन्हें देखते हैं और देखते ही रहते हैं। और वे न सिर्फ इसे देखते हैं बल्कि पूरी गरिमा के साथ उसका बयान करते हैं। पत्तों पर पंछियों के पैदल-पैदल चलने में जितनी सादगी है, उतनी ही भव्यता भी है।

एक और कविता में मुर्गी डाँट रही है मुर्गे को कि तमीज़ से छींको। यह समीकरण पहले कभी न देखा गया, न सुना गया है। लेकिन प्रभात की नज़र यह भाँप लेती है कि मुर्गे और मुर्गी के बीच क्या चल रहा है। छोटा सीटू सो रहा है और उसके जाग जाने को लेकर मुर्गी चिन्तित है। मुर्गे को समझाने का और कोई तरीका नहीं।

सोया सीटू जाग रहा है
बार-बार इस छींक से
मुर्गे से बोला मुर्गी ने
छींको ज़रा तमीज़ से

संग्रह में प्रोइती रॉय के चित्र बेमिसाल हैं। 'मुर्गे की छींक' वाली कविता के साथ जो चित्र है, उसे कविता पढ़ते हुए अगर थोड़ा ठहरकर देखें, तो उसमें मुर्गी का डाँटना जैसे सुनाई पड़ सकता है। मुर्गे के शरीर की लोच, मुर्गे के नज़दीक आकर मुर्गी का यह हिदायत देना, झुककर धीरे-से बोलना कि छोटा सीटू सो रहा है, आँखों में गुस्सा और शिकायत उस चित्र में साफ झलकती है। इसके साथ ही, मुर्गे का लाचार होकर छींकना और यह स्वीकारना कि 'वह क्या करे, छींक रुक ही नहीं रही' भी आप महसूस कर सकते हैं। छींकते समय शरीर का आगे की तरफ झुकना, आँख बन्द हो जाना – सब कुछ बहुत ही बारीकी-से चित्र में दिखाया गया है।

भाषा की हेराफेरी

भाषा से खेलने में भी प्रभात पीछे नहीं हैं। एक कविता में वे 'बयाएँ' और 'दुनियाएँ' जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जो आम तौर पर मिलते नहीं, पर प्रभात इन्हें गढ़ते हैं। एक जगह उन्होंने झिंगुर के साथ उसकी पार्टनर के लिए 'झिंगुरानी' शब्द का इस्तेमाल किया है जोकि यूँही अच्छा लगता है। कविता में तो यह और भी सुन्दर लग रहा है। एक और कविता में टिण्डा के साथ भटिण्डा और भिण्डी के साथ रावलपिण्डी का जोड़ इतना खूबसूरत लगता है कि फिर अगली पंक्ति फीकी लगने लगती है।

'साँप की छतरी' कविता देखते हैं-

साँप ने कुकुरमुत्ते को
छतरी समझ के
बारिश में तान ली
अपनी समझ के

इस कविता में 'अपनी समझ के' का जो भाव है, वह बिरला है। इसमें एक सहचर्य है, आपसदारी है जो प्रकृति में ही ज़्यादा देखने को मिलती है। साँप की मासूमियत और छतरी का अबोला ही इस कविता की जान है।

एक और कविता 'चीना-चीनी' देखते हैं-

चींटा चींटी
पाकर चीनी
खेल रहे थे
छीना छीनी

इस तरह की सुन्दर बात प्रभात ही कर सकते हैं। छोटी-छोटी पंक्तियों में पूरा दृश्य, पूरा मज़ा, पूरी भाषा। छीना छीनी कहकर उन्होंने इसे छीना झपटी से बचा लिया है। इसमें खेल है, प्यार है और नोक-झोंक है। झगड़ा नहीं है। छीना शब्द चींटा के लिए और छीनी शब्द चींटी के लिए सुरक्षित कर दिया है।

इसके साथ बने चित्र में चींटा और चींटी जिस तरह छीना-छीनी खेल रहे हैं, उसमें खेल, ताकत, खिंचाव और अधिकार – सबकुछ साफ दिखता है। चींटा-चींटी जैसे फिगर में ये सब अभिव्यक्तियाँ डाल पाना कोई आसान काम नहीं। प्रोइती जैसे चित्रकार ही ऐसा कर पाते हैं।

अपने ही रिक्शे में परायों की तरह आधा लटका, थककर गहरी नींद में सोया, 50-55 साल की उम्र का एक मेहनतकश व्यक्ति पूरे सामाजिक ताने-बाने का प्रतिनिधि जान पड़ता है।

'शाम की तितली' कविता में प्रभात की कल्पना की बानगी देखिए-

सूरज डूबा शाम ढली
उड़ी उजाले की तितली
अँधियारे में डूब गए
घर जंगल मैदान गली

शाम ढलते ही उजाले की तितली उड़कर चली गई है और अब घर, जंगल, मैदान, गली – सब अँधियारे में डूब गए हैं। उजाले को तितली कहने पर उसका हलकापन, उजलापन और थोड़ी देर कहीं ठहरकर फिर उड़ जाने की फितरत का अच्छा बिम्ब कविता में बनता है। अँधेरे की नदी जैसे अपनी पूर पर है और घर, जंगल, मैदान, गली – सब उसमें डूब गए हैं।

'रिक्शेवाला' कविता में प्रभात कहते हैं-

स्टेशन से घर-गलियों तक
सफर सभी का हो गया

लेकिन रिक्शेवाले का सफर अभी बाकी है, उसका घर जाने कहाँ है। सभी को उनके गन्तव्य तक पहुँचाकर,

देर रात को रिक्शेवाला
रिक्शे पर ही सो गया

'रिक्शेवाला' कविता के लिए प्रोइती रॉय द्वारा बनाया, रिक्शे पर सोता हुआ रिक्शेवाला इतना जीवन्त है कि उसके चेहरे पर थकान, मासूमियत, लाचारी और सन्तोष के मिले-जुले लेकिन स्पष्ट भाव दिखते हैं। इतने से चेहरे पर महज़ चन्द रेखाओं से इतने सजीव चित्रण कम ही देखने को मिलते हैं।

'रेल और व्हेल' कविता में एक बिलकुल नई बात देखने को मिलती है।

रेल चली भाई रेल चली
नभ में कुरजों की बेल चली
समन्दरों में व्हेल चली,
व्हेल चली भाई व्हेल चली

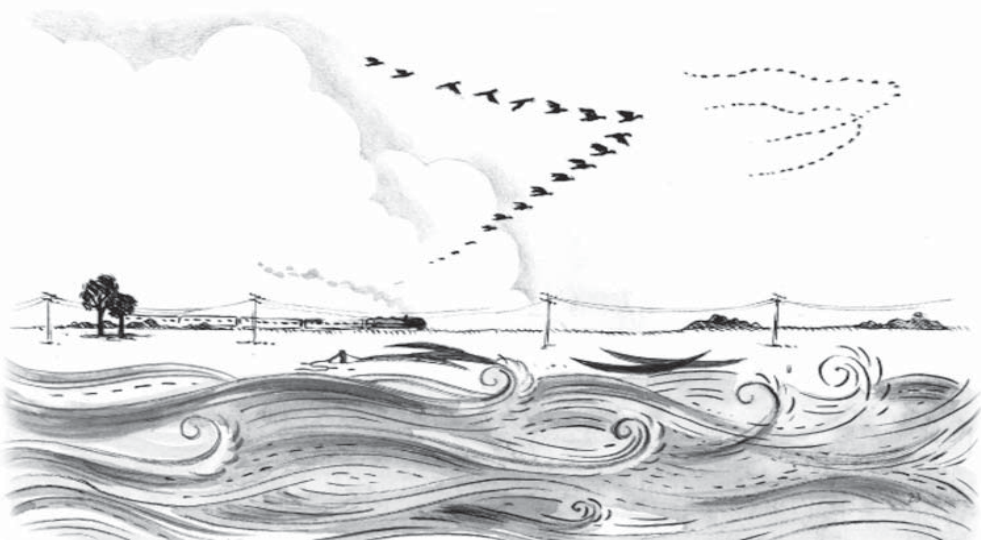

यह जो 'नभ में कुरजों की बेल' है, यह बिलकुल नया प्रयोग है। बगुलों की कतारें, पंक्तियाँ, झुण्ड, पंछियों के बादल तो हमने सुने और पढ़े हैं। पर यह कुरजों की बेल प्रभात का कमाल है। रेल, बेल और व्हेल का संयोजन भी अनूठा है।

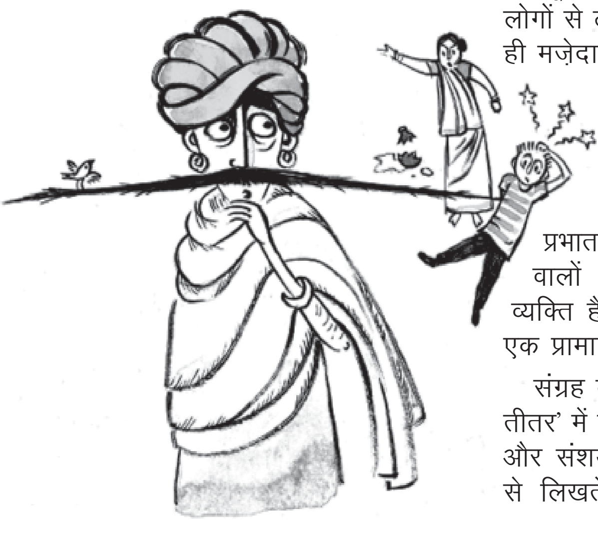

एक ही दृश्य में रेल का चलना, नभ में कुरजों की बेल का चलना और समन्दर में व्हेल का चलना – इन तीनों का एक ही फ्रेम में होना चित्रकार की कल्पना शक्ति और उसके अवलोकन की गहराई बताता है।

'मूँछों की छड़ी' कविता में मूँछ का लोगों से टकराने वाला विज़ुअल बड़ा ही मज़ेदार है।

आफत की सी छड़ी हो गई
मूँछ इतनी बड़ी हो गई
जब सीधी तन जाती थी
लोगों से टकराती थी

प्रभात लम्बी और बड़ी-बड़ी मूँछों वालों के साथ उठने-बैठने वाले व्यक्ति हैं, इसलिए उनकी कहन में एक प्रामाणिकता है।

संग्रह की शीर्षक कविता 'तोतिया तीतर' में प्रभात दरअसल, एक खोजी और संशय से देखने वाले की तरह से लिखते हैं और अपना कौतूहल

जताते हैं - घास की तरह दिखने वाला हरा टिड्डा ऐसे चल रहा है जैसे हरे रंग का तीतर घास के भीतर चल रहा हो।

घास को चलते कभी न देखा
वह टिड्डा था घास सरीखा
चलता था जो घास के भीतर
जैसे कोई तोतिया तीतर

यह कविता संग्रह हमारे इर्दगिर्द के मामूली लेकिन अहम और खूबसूरत किरदारों का कोलाज है। इसमें भाषा का रोचक संसार है। बारीकी-से देखना है और मासूमियत से कहना है। न कोई गूढ़ता है न लफ्फाज़ी। प्रभात को यह आता ही नहीं; इसलिए, कहा जाता भी नहीं।

अनिल सिंह: पिछले 25 वर्षों से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। विगत डेढ़ दशक से प्राथमिक शिक्षा उनका प्रमुख कार्य रहा है। भोपाल के आनंद निकेतन डेमोक्रैटिक स्कूल की संकल्पना के दिनों से वे जुड़े रहे और उसका संचालन किया। वर्तमान में, टाटा ट्रस्ट के पराग इनिशिएटिव से जुड़कर बाल साहित्य और पुस्तक संवर्धन का काम कर रहे हैं।

सभी चित्र *तोतिया तीतर* किताब से लिए गए हैं।

कविता संग्रह: तोतिया तीतर, लेखक: प्रभात, प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन, प्रकाशन वर्ष: 2024, पृष्ठ संख्या: 35, मूल्य: 70 रुपए।